अतीत की आंखों से वर्तमान का चित्रण

रामअवतार बैरवा

जीवन में हर वस्तु किसी न किसी उपयोग के लिए बनी है। सभी निर्जीव वस्तुएं इस सम्पूर्ण जगत और जन-जीवन के चालन और विकास में बहुत बड़ी सहायक हैं। रोटी और किताबें दो ऐसी वस्तुएं हैं, जो इस मानवीय जीवन का आधार तत्व हैं। एक व्यक्ति के शरीर को पोषित करती है, दूसरी आत्मा को। दोनों तरह के विकास की पहली शर्त रुचिकर होना है। दूसरी शर्त सात्विकता है। कितना भी स्वादिष्ट भोजन हो या कितना भी बेहतर साहित्य हो अगर उसमें ये दोनों शर्तें अनुपालित नही होंगी तो विकास संभव नही। भावनाएं, संवेदनाएं और स्पंदन किसी देश, काल, वर्ग के नही होते मगर एक क्षेत्र विशेष की समस्याएं और पीड़ा उसकी अपनी होती हैं। इसीलिए एक क्षेत्र विशेष की बेहतर रचना अन्य क्षेत्र के रहवासियों को उतनी अनुकूल नही लगती। बड़ा कारण उस तरह की परिस्थिति से न गुजरना भी हो सकता है। एक समतल पर रहने वाला अगर पहाड़ियों पर चढ़ा - उतरा या गिरा फिसला न हो तो उस दर्द का अहसास भला वो कैसे कर सकता है ? जब कोई घास काटने वाली ऊंची - ऊंची घाटियों से घास का भरोटा अपने घर की ओर लुढ़काती है और अगर वो भरोटा कही अन्य गहरे गड्ढे की ओर लुढ़क जाता है तो जो परेशानी और खीझ वो महिला व्यक्त करती है, वह वही का रहने वाला अधिक बेहतर समझ सकता है। इस तरह का कथ्य अगर साहित्य का हिस्सा बनता है तो ऐसे दर्दीले साहित्य से कोई दूर किसी सागर किनारे समतल में रहने वाला उतना संवेदनशील नही होगा। घाटियों, पर्वतों में रहने वालों के दर्द बहुत गहरे होते हैं। एक मां के दिमाग की घड़ी की सूई सदा अपने स्कूल गए बच्चे के कदम गिनती रहती है। जब वो घर पहुंच जाता है तब जान में जान आती है। पूर्वोत्तर भारत का अधिकांश साहित्य रिश्ते-नातों की ऐसी ही काल कथा के बीच से छनकर निकला है।

पूर्वोत्तर की चर्चित रचनाकार युइमी वाशम कहती हैं -"मैं हमेशा से अपने समुदाय और अपने आस-पास के माहौल को लेकर बहुत संवेदनशील रही हूँ। मुझे लगता है कि यह बात किसी न किसी तरह से इस बात में झलकती है कि मेरी बहुत सी कविताएं हमारे समाज के बारे में कैसे बात करती हैं, हालांकि मैं इसे अपनी माँ और परिवार या प्रेमी के लिए व्यक्तिगत बनाती हूँ।"

निनी लुंगालांग की कविता में धुंध में डूबे पहाड़ की स्मृतियों से सामान्य की ओर झुकती ये अपवर्तित किरण देखिए - "तो मैं वही लौटता हूं, जहाँ से मैंने शुरुआत की थी,

मैं जाता हूं क्योंकि मुझे जाना ही है :

मैं उस धूल में लौट जाता हूँ जिससे मैं बना था

और वो हवा जो मुझमें जीवन फूंकती है-

और फिर भी - धुंध भरी ऊंचाई से मैं देखता हूं,

तुम्हारा चेहरा अब अजीब है, टूटा हुआ, अपवर्तित

मेरे आँसुओं के चश्मे में।"

अतीत के दृश्य को वर्तमान के साथ चित्रित करने में जिस शास्त्रीयता का प्रयोग आधुनिक चश्मे के साथ किया गया है, वह एक पर्वतीय क्षेत्र का कवि ही कर सकता है। बांग्ला साहित्य की बरगद तले पूर्वोत्तर साहित्य ने अनेक आयाम छुए हैं।

पूर्वोत्तर क्षेत्र में प्रचलित असमिया, नेपाली, बोड़ो, गारो, बांग्ला और मणिपुरी के अलावा सभी बोलियों में उत्कृष्ट साहित्य लिखा जा रहा है। आकाशवाणी एक लम्बे अर्से से सर्वभाषा कवि सम्मेलन का आयोजन करता आ रहा है, इस नाते मेरा पूर्वोत्तर में प्रचलित सभी भाषाओं की कविताओं और साहित्य से बहुत नज़दीकी रिश्ता रहा है। यहां से जो भी रचनाएं प्राप्त होती हैं, वो यहां की प्रकृति, संस्कृति और स्थानीय मिट्टी में लथपथ संघर्ष ओर संकल्प की कहानी कहती हुई नज़र आती हैं । शंकरदेव से लेकर बेजबरुआ, हेमचन्द गोस्वामी, रजनीकांत बारदोलाई, शेलधर खोवा, क्षेत्री वीर, एम्नव किशोर सिंह, विनयचंद बरूआ, हितेश्वर बरूआ , इंदिरा गोस्वामी तक ने पूर्वोत्तर साहित्य को बहुत अधिक समृद्ध किया है । सोशल मीडिया के प्रभाव में यहां का साहित्य शेष दुनिया से सीधे सम्पर्क में आ चुका है। इंटरनेट ने अब यहां की भाषाओं और प्रमुख बोलियों को अन्य भाषाओं में अनूदित करने की सुविधा भी दे दी है। आने वाले दिनों में यहां का साहित्य छूटे हुए पन्नों के साथ जुड़कर भारतीय साहित्य को नया क्षितिज देगा।